हिमाचल प्रदेश के भेड़पालकों में पशुजन्य रोग : नियन्त्रण एवम् रोकथाम

अतुल गुप्ता एवं कुलभूषण नागल

पशु जनस्वास्थ्य एवम् जानपदिक रोग विभाग, चौ०स०कु०हि०प्र०कृ. वि., पालमपुर

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का अहम् योगदान है तथा पशुधन भारतीय कृषि की रीढ़ है। हिमाचल प्रदेश की लगभग 90 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन यापन करती है जो कि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पशुपालन पर आश्रित है। इस बात के यथेष्ट प्रमाण हैं कि भेड़-बकरी पालन आदिकाल से ही मानव जीवन का अभिन्न अंग रहा है। हिमाचल प्रदेश के कृषक विशेषकर जन-जातीय क्षेत्रों में निवास करने वाले गद्दी समुदाय के पशुपालक मुख्यतः भेड़ व बकरी पालन व्यवसाय पर निर्भित हैं। 18वीं पशुधन की जनगणना के अनुसार हिमाचल प्रदेश में 9,01,540 भेडें तथा 12,40,835 बकरियां हैं जिनका कुल पशु आबादी में लगभग 40 प्रतिशत से अधिक योगदान है। पारम्परिक भेड़ पालकों व पशुओं के बीच लम्बे समय तक सम्पर्क के कारण विभिन्न संक्रामक रोगों के संचरण की संभावना बढ़ जाती है। ऐसे संक्रामक रोग जोकि पशुओं और मनुष्यों के बीच प्राकृतिक रूप से फैलते हैं उन्हें पशुजन्य या जूनोटिक (Zoonotic) रोग कहते हैं। इस लेख में उन जूनोटिक रोगों का विस्तृत वर्णन किया गया है जो भेड़-बकरी पालन व्यवसाय से जुड़े पशुपालकों के स्वास्थ्य पर कुप्रभाव डाल सकते हैं। कुछ प्रमुख रोगों का विवरण निम्नवत् है:

संक्रामक एकथाईमा/पीबभरी :

यह विषाणु जनित संक्रामक रोग ज्यादातर भेड़/बकरी के बच्चों में पाया जाता है। विभिन्न प्रकार के उपकरण, बिछौने, खाद एवम् चारा इत्यादि इस रोग को फैलाने में कारगर भूमिका निभाते हैं।

भेड़/बकरियों के होठों, नाक व मुँह पर लाल रंग के धब्बों का उभरना इस बिमारी के प्रारंभिक लक्षण हैं। उसके उपरान्त मुँह के बाहर छाले उभर आते हैं। हल्का बुखार तथा घास चरने में असमर्थता आदि, भेड़-बकरियों में इस रोग के अन्य लक्षण हैं।

मनुष्यों में यह संक्रामक रोग त्वचा के माध्यम से शरीर में फैलता है। संक्रमित पशु पालकों में त्वचा पर लाल घाव तथा घाव के नजदीक सूजन एवम् दर्द इस बीमारी के मुख्य: लक्षण हैं।

नियन्त्रण एवं रोकथाम :

- रोगग्रस्त पशु को अलग रखने तथा घाव पर रोगाणुरोधक क्रीम/लेप लगाने से इस रोग की रोकथाम की जा सकती है।
- पशुचिकित्सक की सलाह के अनुसार रोगग्रस्त भेड़-बकरियों में प्रतिजैविक (Antibiotic) दवाईयों का प्रयोग लाभप्रद हैं।
- मरणोंपरांत भेड़/बकरी की खाल नहीं उतारनी चाहिए तथा उनके शव को सुनयोजित तरीके से गहरे गढे में दबा देना चाहिए।
- भेड़-बकरियों में इस रोग से बचाव के लिए रोग प्रतिरोधक टीकाकरण करना भी लाभकारी सिद्ध होता है।

ऐन्थ्रैक्स /जहरी बुखार/तिल्ली बुखार/रक्तांजली रोग :

यह एक तीव्रता से फैलने वाला जीवाणु जनित घातक रोग है जो सामान्य रूप से गायों, भैंसों, भेड़ों व बकरियों को प्रभावित करता है। भेड़-बकरियों में यह रोग दूषित चारे, अन्य संक्रमित पशुओं के सम्पर्क में आने तथा ऐन्थ्रैक्स बीजाणु द्वारा दूषित हवा के शरीर में प्रवेश करने से फैलता है।

मनुष्यों में यह रोग, रोगी पशु या उसके स्रावों के सम्पर्क में आने से, दूषित माँस खाने से, मृत पशु की खाल उतारने से तथा संक्रमित भेड़ों की ऊन उतारने से प्रायः फैलता है।

रोगग्रस्त पशु में तेज बुखार, कंपन, तेज सांस व हृदयगति जैसे लक्षण प्रकट हो सकते हैं परन्तु अति तीव्र अवस्था में पशु बिना लक्षण के मृत पाया जाता है। मृतपशु की योनि, गुदा, नाक, कान अथवा सभी द्वारों से झागदार काले खून का स्राव होता है तथा शरीर मृत्यु उपरांत अकड़ता नहीं है।

मनुष्यों में यह संक्रमण होने पर त्वचा, फेफड़ों व आंतों में रोग के लक्षण प्रकट होते हैं। खूनी दस्त, पेट में दर्द, श्वसन प्रक्रिया में कठिनाई तथा त्वचा में भूरे लाल रंग के परिगलित घाव, मनुष्यों में इस रोग के प्रमुख लक्षण हैं।

नियंत्रण एवं रोकथाम :

- मृत पशुओं के शरीर का विच्छेदन न करें तथा वैज्ञानिक ढंग से उसे गहरे गढे में दबा दे अथवा जला दें।
- रोगी पशु के सम्पर्क में आये चारे एवम् बिछावन को उसी स्थान पर जला देना चाहिए।
- बिमारी फैलने की स्थिति में एंटीबायोटिक दवाइयों द्वारा ईलाज किया जा सकता है।

बुसेल्लोसिस/संक्रामक गर्भपात/माल्टा बुखार :

यह हमेशा पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाला जीवाणु जनित संक्रामक रोग है। बीमारी से ग्रस्त पशु से गिरने वाले स्राव विशेषकर गर्भपात के बाद योनिद्वार से गिरने वाला स्राव तथा संक्रमित

जेर बीमारी फैलाने का प्रमुख कारण है।

गाभिन भेड़-बकरियों में मुख्यतः 4-4.5 महीने में गर्भपात, जेर का अटकना या समयानुसार न गिरना, घुटनों/टखनों के जोड़ में सूजन एवं दर्द इस बीमारी के लक्षण हैं। नर पशुओं में इस रोग के प्रमुख लक्षण अण्डकोष में सूजन तथा प्रजनन क्षमता में कमी है।

मनुष्यों में यह बीमारी दूषित दूध के सेवन से तथा संक्रमित पशुओं या उनके स्रावों के सम्पर्क में आने से होती है जिसके मुख्यः लक्षण बुखार, पसीना आना, कमजोरी, पीठ दर्द तथा मांसपेशियों व जोड़ों में दर्द होता हैं।

नियंत्रण एवं रोकथाम :-

- प्रभावित पशुओं को अन्य स्वस्थ पशुओं से अलग रखें।
- पशुओं का रोगप्रतिरोधक टीकाकरण करवाएं।
- दूध को अच्छी तरह उबाल कर ही पिंए।
- मनुष्यों में एंटीबायोटिक दवाओं द्वारा ईलाज। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की सिफारिश के अनुसार रोग होने पर भेड़पालकों को रिफैम्पिसीन (600-900 mg) तथा डोक्सिसाइक्लिन (100 mg) नामक दवाईयों का सेवन दिन में दो बार तथा लगातार छः हफ्ते तक करना चाहिए।
- संक्रमित पशु की जेर, भ्रूण तथा स्रावों से दूषित घास, बिछावन इत्यादि को जला दें या अच्छी तरह दबा दें।
- समय-समय पर भेड़ पालकों को अपने खून की जाँच करवानी चाहिए।

पशुस्थानिक गर्भपात :

यह संक्रामक रोग एक प्रकार के सूक्ष्मजीवी, क्लैमाइडोफिला से होता है। यह सूक्ष्मजीव भेड़ों में संक्रामक गर्भपात का सबसे आम कारण है। भेड़-बकरियों तथा मनुष्यों में यह रोग दूषित पानी/चारे या संक्रमित पशुओं के भ्रूणों, जर या योनि द्रव के सम्पर्क में आने से फैलता है।

गर्भपात, नवजात बच्चों/मेमनों में कमजोरी तथा २-3 दिनों के भीतर मृत्यु होना, उत्पादक विफलता, बार-बार श्वास लेने में कठिनाई तथा जोड़ों व आंखों में सूजन, पशुओं में इस रोग के मुख्यः लक्षण हैं।

मनुष्यों में यह संक्रमण स्पर्शोन्मुख है लेकिन कभी-2 फ्लू/जुखाम जैसे लक्षण जैसे कि बुखार, सिर दर्द, कंपन,जोड़ो में दर्द, प्रकाश के लिए संवेदनशीलता गले में खराश इत्यादि इस रोग में पाए जाते हैं। गर्भवती महिलाओं में यह रोग घातक रूप धारणकर, गर्भपात का कारण बन सकता है।

अतः प्रभावति पशु के सम्पर्क में आने वाले भेड पालकों को अपना विशेष बचाव करना चाहिए। पशु प्रबंधन गतिविधियों के दौरान, व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरणों जैसे दस्ताने, जूते, चश्मे व ऐप्रन आदि के प्रयोग से इस बीमारी का बचाव किया जा सकता है।

भेड़-बकरियों में हल्क रोग/रेबीज

यह एक विषाणु जनित रोग है जो रोगी पशु द्वारा स्वस्थ पशु या मनुष्य को काटने के कारण होता है। यह रोग सभी प्रकार के स्तनधारी पशुओं को प्रभावित करता है। भेड़-बकरियों में यह रोग मुख्यतः संक्रमित बन्दर, कुत्ते, नेवले, लोमड़ी या बिल्ली आदि के काटने से फैलता है।

यह विषाणु स्नायुतंत्र (मस्तिष्क एवं मेरूदण्ड) को प्रभावित करता है जिससे शरीर की सुचारू कार्य प्रणाली रूक जाती है। इस रोग से रोगी के व्यवहार में बदलाव, अधिक उतेजना, पागलपन, पक्षाघात (Paralysis) व मौत हो जाती है। यदि किसी व्यक्ति या पशु में इस रोग के लक्षण उत्पन्न हो जाएं तो उसकी मृत्यु की 100 प्रतिशत संभावना होती है। प्रत्येक वर्ष विश्व भर में लगभग 60,000 व्यक्ति रेबीज की चपेट में आने से मरते हैं।

नियंत्रण एवं रोकथाम :

इस रोग से होने वाली हानि से बचने के संदर्भ में "बचाव ईलाज से बेहतर उपाय है" कहावत अधिक सार्थक है क्योंकि रोग होने की अवस्था में कोई चिकित्सा उपलब्ध नहीं है तथा केवल टीकाकरण से ही इस रोग की रोकथाम की जा सकती है।

- रोगग्रस्त पशु के सम्पर्क में आने के तुरन्त बाद रेबीज निरोधक टीकों का कोर्स लगवाएं। इन टीकों का पूरा कोर्स करवाना अनिवार्य होता है।
- कुत्तों के काटने व रोगग्रस्त पशु के सम्पर्क में आने से बचें।
- पागल कुत्तों के काटने पर शीघ्रता से घाव को अच्छी तरह साबुन और पानी से धोएं।
- पालतु कुत्तों को प्रतिवर्ष रोग प्रतिरोधक टीकाकरण करवाना सुनिश्चित करें क्योंकि यह टीकाकरण शीघ्र, सरल बचाव का उपाय है।
- यह विषाणु गर्म पानी, डिटॉल, साबुन व लाल दवाई के सम्पर्क में आने से निष्क्रय हो जाता है, अतः उपरोक्त तत्वों के प्रयोग से पशुशाला को कीटाणुरहित बनाया जा सकता है।

दाद (Ringworm)

यह फंफूदी जनित रोग संक्रमित पशुओं में आने से फैलते है। बालों का झड़ना, त्वचा पर लाल रंग के चक्राकार घाव होना, तथा खुजली इत्यादि भेड़-बकरियों व भेड़पालकों में इस रोग के प्रमुख लक्षण हैं। अतः इस बिमारी से बचाव हेतू निम्नलिखित बातों पर अवश्य ध्यान दें।

- समय-समय पर भेड़ों की त्वचा व ऊन की जांच करवाएं।
- रोगी पशु को अत्याधिक नमी वाले स्थान पर न रखें।

- भेड़-बकरियों को 2-3 बार कीटनाशक स्नान (Dip ping) अवश्य करवाएं।
- रोग के लक्षण प्रकट होने पर प्राथमिक चिकित्सा के रूप में टिंक्चर आयोडिन का लेप घाव पर लगाएं।
- प्रतिकवक (Antifungal) दवाईयों के प्रयोग से इस रोग का उपचार किया जाता है।

टोक्सोप्लाज्मोसिस

इस पशुजन्य रोग का कारण टोक्सोप्लाजमा गौंडाई नामक एक परजीवी है। हलांकि हिमाचल प्रदेश में इस प्रकार का संक्रमण यदा-कदा ही होता है तथा भेड़ पालकों को शायद ही कभी इस बीमारी का सामना करना पड़ा हो परन्तु इस लेख का मूल उद्देश्य सभी कृषक महिलाओं को इस रोग से होने वाले संभावित खतरे के बारे में जागरूक करना है।

गर्भावस्था में इस परजीवी के संक्रमण से गर्भवती महिलाओं में गर्भपात या नवजात शिशु में विषमता तथा आंखों की समस्या पैदा होती है। हलांकि माँ में प्रायः इस संक्रमण के उप-नैदानिक (Sub-Clinical) लक्षण ही पाए जाते हैं।

मनुष्यों मे यह रोग दूषित/अधपके मांस के सेवन से, बिल्लियों के मल को छूने, दूषित मिटटी अथवा मेमने के जन्म में शामिल किसी व्यक्ति के दूषित कपड़ों के सम्पर्क में आने से होता है।

नियन्त्रण एवं रोकथाम :

अधिकांश संक्रमणों में विशिष्ट ईलाज की आवश्यकता नहीं पड़ती है परन्तु गर्भावस्था के दौरान संक्रमण की परिकल्पना होने पर गर्भवती महिलाओं को तुरन्त महिला चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए। भोजन ग्रहण करने से पहले हाथों को अच्छी तरह साबुन से धो लें तथा यदि संभव हो सके तो गर्भावस्था के दौरान भेड़-बकरी प्रबंधन में भागीदारी सुनिश्चित न करें तथा गर्भावित भ्रूण व नवजात भेड़ के बच्चे के सम्पर्क में आने से बचें।

भेड़-बकरी पालन अपने बहु-उपयोगिता की वजह से ग्रामीण अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण घटक है। हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी राज्यों में भेड़ पालकों की आय का यह एकमात्र भरोसेमंद स्रोत है जो आर्थिक रूप से कमजोर पशुपालकों की आजीविका के लिए बहुमूल्य योगदान प्रदान करता है। इस लेख के अवलोकन से इस निष्कर्ष की स्पष्ट संस्तुति होती है कि भेड़-बकरी पालकों को उपरोक्त वर्णित रोगों के बारे में जागरूक होना परमावश्यक है।